International Recognized Double-Blind Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal
Review Of Research
ISSN 2249-894X **Impact Factor : 3.1402 (UIF)**
Volume - 4 | Issue -8 | May - 2015 **Available online at www.ror.isrj.org**

'नीम का पेड़' का दृश्यश्रव्य रूपांतरण- व सीमाएं : एक विश्लेषण

उमेश कुमार पाठक
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग , हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केंद्र, धर्मशाला,हिमाचल प्रदेश.

Short Profile :
Umesh Kumar Pathak is Journalism and Mass Communication Department at Himachal Pradesh Visvanvidyalaya , Regional Centers , Hospice , Himachal Pradesh.

सारांश :

साहित्यिक कृतियों का दृश्य रूपांतरण एक श्रव्य-क समझ यानी कि विजुअल सेंस की मांगत्मदृश्या करता है। हालांकि, साहित्य के पाठ्य रूप का अपना विशेष महत्त्व होता है तथापि उसका दृश्य श्रव्य–क परिधि को और भीरूपांतरण उसकी रचनात्म विस्तृत एवं व्यापक बनाता है । यही कारण है कि राही मासूम रज़ा जैसे कथाकार दृश्यमों माध्यश्रव्य-के लिए लेखन को सेमी क्रिएटिव काम मानते हैं। भारतीय संदर्भ में दृश्यम के र माध्यश्रव्य-ूप में टेलीविजन की लोकप्रियता बढ़ाने में धारावाहिकों की भूमिका उल्लेखनीय है। गौरतलब है कि साठ और सत्तर के दशक में जहां धारावाहिक उपन्यास छापने का काम 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिंदुस्तम' जैसे पारिवारिक पत्रिकाओं ने किया था अस्सी के दशक में वही काम टेलीविजन ने किया । इस आलोक में राही मासूम रज़ा द्वारा लिखित उपन्यास 'नीम का पेड़' पर आधारित टेलीविजन धारावाहिक बहुत चर्चित होने के साथ साथ काफी लोकप्रिय रहा-। ध्यातव्य है कि गुरबीर सिंह ग्रेवाल के निदेशन में नवमन मलिक ने इस धारावाहिक का निर्माण किया था जिसका प्रसारण दूरदर्शन पर सबसे पहले में किया गया था 1991। इस धारावाहिक में पंकज कपूर ने अपने सशक्त अभिनय द्वारा बुधीराम के चरित्र को काफी जीवंत एवं प्रभावी बना दिया था। इस धारावाहिक की लोकप्रियता का अनुमानइस बात से भी लगाया जा सकता है कि दूरदर्शन ने दर्शकों की विशेष मांग पर इसका पुप्रसारण किया। मशहूर गज़ल गायक जगजीत सिंह की आवाज़ में : इटल गीतइसका टा (Title Song) 'मुंह की बात सुने हर कोई काफी कर्णप्रिय रहा तथा इस गीत को दर्शक प्रायगुनगुनाते रहे। और:, इस धारावाहिक को लेकर जो सबसे खास बात है, वह यह है कि इसकी लोकप्रियता केवल शहरों तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि गांव के लोग भी इसके प्रत्येक एपिसोड को बड़े चाव से देखते थे।

कुंजी शब्द:*सामाजिक विषमता, राजनीतिक संदर्भ, व्यष्टिबोध, समष्टि चेतना, मूल्य विघटन, प्रगतिशील चेतना,कथानक, संवाद योजना, दृश्य भाषा, शैली संयोजन.*

Article Indexed in :
DOAJ Google Scholar DRJI
BASE EBSCO Open J-Gate

परिचय:

टेलीविजन धारावाहिक 'नीम का पेड़' में सामाजिक विषमता और समकालीन राजनीतिक संदर्भों के बीच सामान्य जनजीवन का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। चूंकि, इस धारावाहिक में पटकथा लेखन का दायित्व खुद राही मासूम रज़ा ने स्वीकार किया था, इसलिए धारावाहिक 'नीम का पेड़' का कथानक अपनी रचनात्मकता में उपन्यास के मूल पाठ को ही दोहराता है। कथावस्तु के आलोक में जमींदार-आसामी के संबंध, आज़ादी के बाद भारत की राजनीतिक प्रवृत्तियां और स्वातंत्र्योत्तर भारत में आमजन की महत्वाकांक्षाएं व उसकी परिणति ही धारावाहिक के मुख्य विषय हैं। इस आलोक में निदेशक गुरबीर सिंह ग्रेवाल स्वीकार करते हैं कि "औपन्यासिक कृति 'नीम का पेड़' में रचनाकार राही मासूम रज़ा ने स्वातंत्र्योत्तर भारत का परिवेश बोध, सामाजिक को समग्रता में राजनीतिक चिंतन और अनुभव वैविध्य त करने की कोशिश की है।प्रस्तु यही कारण है कि उन्होंने पटकथा लेखन जैसे महत्त्वपूर्ण दायित्व का पालन करके इस कालजयी रचना 'नीम का पेड़' के दृश्य-श्रव्य रूपांतरण को टेलीविजन धारावाहिक के रूप में साकार कर हमारा काम बिल्कुल आसान कर दिया। हालांकि, राही जी केवल ए 29पिसोड के लिए ही पटकथा लेखन का कार्य कर पाए और को ज़ाफरी साहब ने त शेष इस दायित्व के पश्चामें उनकी मृत्यु 1991 बड़ी गंभीरता एवं कुशलता के साथ पूरा किया'।

दरअसल धारावाहिक 'नीम का पेड़' की कथावस्तु में मानवतावादी स्वर की प्रमुखता, समाज कल्याण की कामना, राजीनीतिक सिद्धांत एवं व्यवहार और जन साधारण की अभिलाषाओं का दृश्यात्मक संयोजन प्रभावी होने से औपन्यासिक रचनात्मकता के साथ न्यायसंगत है। बतौर मानवतावादी स्वर धारावाहिक में बुधीराम के माध्यम से व्यष्टिबोध अर्थात् वैयक्तिक भावनाओं की दृश्यात्मक अभिव्यक्ति में मूल उपन्यास का अनुकरण किया गया है, हालांकि, कई इस संदर्भ में प्रसंगानुकूल कई काल्पनिक दृश्यों का संयोजन भी लिया गया है। यही कारण है कि धारावाहिक में व्यष्टि चेतना अंतत समष्टि चेतना में पर्यवसित हो गई है। :

प्रस्तुति एवं विश्लेषण:

साहित्य जब स्वानुभूति से प्रेरित होकर लिखी जाती है तोउसके पास मूलतः मुद्रित माध्यम और मंच माध्यम होता है जिनके द्वारा वह रचना आम लोगों तक संप्रेषित हो पाती है। पुस्तक के रूप में कोई कृति अधिक स्थायी होती है। पाठक अपनी सुविधासे पढ़ता है। पढ़--पढ़कर समझता है। बारबार पढ़ता है। चूंकि, पाठक पढ़ाचनाकार को अपनी पूरी रचना कौशल दिखाने का अवसर लिखा होता है इसलिए र-म से होती है तो वह भी एक माध्यम के रूप में अधिक माध्यश्रव्य -प्राप्त होता है। किंतु जब साहित्य की प्रस्तुति मंच अथवा किसी दृश्य प्रभावी हो जाती है जो रचना को अपने अनुरूप ढलने के लिए बाध्य करता है। मंच के सामने ही दर्शक बैठे होते हैं। उन्हें तत्काल प्रभावित करना होता है। उन्हें लक्ष्य में रखकर लिखी गई कृति की रचना प्रक्रिया में वे सीधे उपस्थित होते हैं। इस संदर्भ में भाषा सपाट और सरल होनी अपेक्षित होती है। यहां दर्शक समूह में बुद्धिजीवी से लेकर सामान्य लोग भीउपस्थित होते हैं। इसलिए यहां साहित्य लिखित की अपेक्षा दृश्य-श्रव्य कर्म बन जाती है।

विवेचनार्थ, कथावस्तु के स्तर पर धारावाहिक 'नीम का पेड़' के संदर्भ में कतिपय महत्त्वपूर्ण बिंदु ओं का उल्लेख किया जा सकता है, यथा-

- गांव मदरसा खुर्द और लछमनपुर कलांसंपूर्ण देश के राजनीतिक वातावरण का दृश्यप्रस्तुत करते हैं। यहां जमींदार और अधिकारियों के अत्याचार सहने को जनता विवश है। आसामियों को अब भी जूतों से पिटवाया जाता है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में भले ही जमींदारी प्रथा समाप्त हो गई हो, किंतु वे पुलिस, पटवारी से मिलकर रिश्वत के बल पर अपनी शक्ति और सत्ता बनाए हुए हैं।
- इसमें मानव की उत्तेजना, खीझ, आक्रोश, निराशा, कुंठा, असंतोष सब कुछ देखा जा सकता है। पुराने मूल्यआज टूट रहे हैं और नए मूल्यस्थापित हो रहे हैं। यही कारण है निदेशक गुरबीर सिंह इस धारावाहिकमें मूल्य विघटन की समस्या को

- हर स्तर पर प्रभावी दृश्यांकन के साथ अनुभूति का विषय बनाया है। धारावाहिक का टाइटल गीत'मुंह की बात सुने हर कोई' इस संदर्भ में ध्यातव्य है।
- धारावाहिक के चौबीसवें एपिसोड का एक दृश्य, जहां ज़ामिन मियां की रिहाई का वक्त करीब आ रहा था और मुसलिम मियां अपनी दुश्मनी को फिर से ताजा करने की िफराक में लगे,थेको नफ़रत के मिशाल के तौर पर देखा जा सकता है।
- सत्ता ही सब कुछ है और इसके सामने आज का आदमी बौना है। हर व्यक्तित्व अधूरा है। जीवन में कोई आदर्श नहीं है। चारों ओर केवल राजनीतिक सत्ता एवं उसके प्रभाव को देखा जा सकता है, महसूस किया जा सकता है। यही कारण है कि ताकतवरों के ऐब नहीं होते, उनके शौक होते हैं तथा अवाम जिसे गुनाह समझती है वो तो इनके शौक हुआ करते हैं। परिणामस्वरूप सुखीराम जैसे पात्र के दृश्यांकन में निदेशक ने अपनी निदेशकीय कुशलता का उल्लेखनीय परिचय दिया है।
- धारावाहिक के अंत में बुधई द्वारा अपने बेटे सुखीराम की हत्याकरना उसके मोहभंग की स्थिति को दर्शाता है। गौरतलब है कि स्वतंत्रता के बाद आम लोगों के मन व्यवस्था परिवर्तन को लेकर एक उम्मीद जगी थी, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। नेताओं के वादे खोखले साबित हुए। सबके घर में खुशहाली का वादा किया गयापर यथार्थ में हम पूरे शहर में एक चिराग तक नहीं जला सके। इस संदर्भ में दुष्यंत कुमार की कुछ पंक्तियां उल्लेखनीय हैं-

''कहां तो तय था चिरागां हरेक घर के लिए।
कहां चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।।''

दरअसल धारावाहिक 'नीम का पेड़' की कथावस्तु अपने देशकाल से पूरी तरह जुड़ी हुई है। चारों ओर फैली भयावह स्थितियों भूखी नंगी जनता की परेशानियों एवं शासन व्यवस्था की लापरवाही सब कुछ वह अपनी परिधि में समेटता है। साथ ही इसमें जीवन और परिवेश को संवेदना के धरातल पर अनुभव करके दृश्यात्मक प्रभाव के साथ प्रस्तुत किया गया है।

चरित्र:चित्रण-

धारावाहिक 'नीम का पेड़' में जिन पात्रों की संकल्पना की गई है, वे मूल उपन्यास में उल्लेखित चरित्रों के अनुरूप है, हालांकि कहींहै। विवेचनार्थव्यकहीं कुछ सहायक पात्रों की संयोजना भी द्रष्ट-, धारावाहिक में चरित्रचित्रण के आलोक में नीम का पेड़ धारावाहिक में - जहां एक ओर बुधीरामसूत्रधार की भूमिका में है, ज़ामिन मियां, मुसलिम मियां, सुखीराम और सामिन मियां कथा की मुख्यभूमिका में हैं, वहीं दूसरी ओर रामबहादुर यादव, बजरंगी, जिलेदार सिंह, रामलखन पांडे, रायबहादुर चंद्रिका प्रसाद वकील अतहर हुसैन, जीवन, अमर सिंह, मेहंदी आदि गौण पात्र होते हुए भी महत्त्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन करते हैं। धारावाहिक में कनीज़ बीबी,कुबरा बेगम, दुखिया, शारदा, शहनाज़, कमलिनी आदि जैसी महिला पात्रों की भूमिका बहुत बड़ी न होने के बावजूद भी बेहद प्रभावशाली हैं। क्योंकि, निदेशक को इन महिला पात्रों के माध्यम से धारावाहिक में प्रसंगानुकूल कहींकहीं- टकराहट उत्पन्न करने में सहूलियत मिली है। दरअसल प्रेमीप्रेमिका-, पितापुत्र-, नेताआसामी के संबंधगत टकराहटों का संयोजन धारावाउपनेता और जमींदार-हिक को दिलचस्प बनाते हैं। इस संदर्भ में चरित्र- र पर धारावाहिकचित्रण के स्त'नीम का पेड़' की कतिपय महत्त्वपूर्ण विशेषताओं का उल्लेख है-

- धारावाहिक के सभी पात्र वास्तविक जीवन से संबंधित लगते हैं।उदाहरण के तौर पर बुधई का चरित्र एक आसामी का चरित्र है। एक सामान्य आसामी में जो गुण-दोष होते हैं, वे सभी बुधई के चरित्र में सहज ही अनुभूत हैं।

- ज़ामिन मियां और मुसलिम मियां जमींदार वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन्हें अच्छी तरह पता है कि जमींदारी प्रथा अब अधिक दिनों तक नहीं चलने वाली है। इसलिए सत्ता में भागीदारी के नए-नए अवसर तलाशते हैं। कुछ काल्पनिक प्रसंगों को जोड़कर निदेशक इस प्रसंग को वर्तमान संदर्भ में प्रस्तुत करने की कोशिश करता है। उल्लेखनीय है कि धारावाहिक में उपन्यास की मूल कथा में कुछ प्रभावी दृश्यों के संयोजन द्वारा धारावाहिक को गतिशीलता प्राप्त हुई है। उदाहरण के तौर पर मुसलिम मियां और उनकी बहू शहनाज़ के संवाद में कई प्रसंग बिल्कुल नए हैं, हालांकि इससे निदेशक स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीति की नब्ज़ को पहचानने में सफलता मिली है।
- शहनाज़ और कमलिनी जैसी आधुनिक महिलाएं प्रगतिशील चेतना से युक्त नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं। उदाहरणस्वरूप शहनाज़ को इस तरह की बातों से बड़ा आश्चर्य होता था कि कैसे कोई औरत एक नाकारा आदमी के साथ पूरी जिंदगी काट देती है। वह कैसे अपने मर्दों को बिना वजह खुश करने में लगी रहती है तथा उसे घर के बाहर की दुनिया की कोई ख़बर भी नहीं होती। तभी तो वह अपने अब्बू से कहती है- " आपने किन जानवरों के साथ मुझे बांध दिया। जानवर भी इतने खुदगर्ज़ और सेल्फिश नहीं होते"।

दरअसल कुछ पात्रों की भूमिका मुख्यपात्र के सलाहकार या सहायक साथी के रूप में है। वे उसके राज़दां बनते हैं और उसे आवश्यक सूचनाएं और सलाह देते हैं।धारावाहिक में उषाकांत, जीवन, हशमत आदि ऐसे ही पात्र हैं जो कहानी को आगे बढ़ाने के लिए मुख्य पात्रों के लिए कोई महत्त्वपूर्ण सूचना या सुराग देने कोई राज़ खोलने, कोई संदेश पहुंचाने आदि जैसे काम करते हैं।इस तरह से धारावाहिक में चरित्रचित्रण का महत्-त्वपूर्ण प्रभाव होता है। क्योंकि, पात्र जो कुछ भी करता है, उससे उसका चरित्र उजागर होता है। इसके विपरीत पात्र कुछ इसलिए भी करते हैं कि उनका एक खास तरह का चरित्र होता है। इस संदर्भ में अमेरिकी उपन्यासकार फिजगेराल्ड का मानना है कि 'करेक्टर इज एक्शन यानी कर्म ही चरित्र है'। अस्तु, पात्रों के चरित्र घटनाओं को प्रभावित करते हैं तथा घटनाएं पात्रों के चरित्र को। यद्यपि धारावाहिक 'नीम का पेड़' की कथा व पात्र योजना एक अंचल या क्षेत्र विशेष तक सीमित है, फिर भी वर्णनात्मक प्रसंगों के अनुरूप दृश्य विकसित होने से पूरी कहानी के बुनावट में कसाव आ गया है तथा कोई भी पात्र शिथिल नहीं हो पाया है।

संवाद संयोजन

जहां पत्रक में छपी हुई कहानी का आनंद पढ़कर लिया जाता है पत्रिकाओं में प्रकाशित अथवा पुस्त, वहीं दूसरी ओर टेलीविजन धारावाहिक में कहानी देखने के साथक ढंग से नहीं बात यह है कि यहां कहानी किसी वर्णनात्मक देने योग्यहोती है। ध्या सास सुननी भी-, बल्कि दृश्यों, पात्रों की क्रिया कलापों, उनकी भाव होती चलती है। यदष्टभंगिमाओं तथा संवादों द्वारा स्पष्यपि प्रकाशित कथाओं में भी कभीन धारावाहिक भी केवल संवादों से ही आगे नहीं बढ़तीकभी बीच में संवाद होते हैं तथा टेलीविज-, यह सही है, फिर भी संवादों का अपना अलग महत्त्व है। दरअसल टेलीविजन धारावाहिकों में संवाद दृश्यों का अनुकरण करते हैं। संवाद की उपयोगिता इस बात पर निर्भर करता है कि वह किसी दृश्य को कितना प्रभावी बनाता है। विवेचनार्थ, टेलीविजन धारावाहिक 'नीम का पेड़' की संवाद योजना के संदर्भ में निम्नलिखित बिंदुओं का उल्लेख किया जा सकता है-

- धारावाहिक 'नीम का पेड़' में संवाद पात्रों की मानसिक स्थिति के अनुकूल है। उनमें संक्षिप्तता, जीवंतता, प्रवाहमयता आदि जैसे गुण विद्यमान हैं। यथा मुसलिम मियां और बुधई का यह संवाद उल्लेखनीय है-

  " मुसलिम: तैं कब आया बे। वहां तो सब खैरियत है न।

  बुधई: मालिक आपके और कुबरा बहिनी के वास्ते कटहल और गुल्लर का खमीरा भेजिन है।

मुसलिम: खाली यही है कि औरो कुछ है।
बुधई: जी एक ठो ख़त भेजिन है।"

- धारावाहिक में कई संवाद आक्रोश, यातना और नियति के चक्रव्यूह में छटपटाती हुई विवश व लाचार जिंदगी को स्पष्ट करते हैं। उदाहरण के तौर पर बुधई का यह संवाद द्रष्ट्य है -"मुदा हम न जाब और न ई घर द्वार बेचे देब। तुमको जाय का है, जाओ"।
- धारावाहिक में मूल औपन्यासिक कथा के अनुरूप संवाद की संयोजना परिवेश या वातावरण के विभिन्नस्थितियों के स्तर पर की गई है। कहीं बैठकों के माध्यम से तो कहीं पार्टियों के माध्यम से। धारावाहिक में 'नीम का पेड़' स्वयं में एक सशक्त पात्र है तथा उसका दृश्यांकन मात्र ही बेजोड़ संवाद के रचनात्मक प्रतिपाद्य को पूरा करता है।
- सत्ता की विवेकहीनता, राजनीतिक व्यवस्था में पनपता भ्रष्टाचार, सत्ताधारियों की मानसिकता एवं निरंकुशता के साथ समाज में आई शिथिलता एवं जड़ता को भी मर्मस्पर्शी संवादों के जरिए वास्तविकता की प्रस्तुति अत्यंत प्रभावशाली है। इस आलोक में सुखीराम का यह संवाद दृश्यको और भी प्रभावी बनाता है-"आपके आशीर्वाद से हमें सब कुछ मिला है आज"।
- जगजीत सिंह की आवाज़ में 'मुंह की बात सुने हर कोई की कोमल पंक्तियां मानवीय व्यवहार की अनुभूति और संवेदनाओं को एक दृश्यात्मक परिवेश और प्रभाव के साथ अभिव्यक्त करती हैं।
- मूल उपन्यास के कुछ संवाद इतने प्रभावी हैं कि उनका उपयोग ठीक वैसे ही धारावाहिक में किया है जैसे कि वेअपने पाठ्य रूप में हैं। इस संदर्भ में बुधई और वकील चंद्रिका प्रसाद का संवाद उल्लेखनीय है-

" चंद्रिका: तुम्हारा नाम ?
बुधई: हमार नाव बुधई है सरकार।
चंद्रिका: अच्छा तो बुधई उर्फ बुद्धिराम यह बताओ कि उस दिन क्या तुमने वाकई रामबहादुर यादव को भागते हुए देखा था..और सोच के बताओ क्योंकि तुमने गीता पर हाथ रखकर सच बोलने की कसम खाई है।
बुधईई तो दिन की बात है न मालिक। रात काफी होय चुकी रही :, हम शोर सुनके उधर लपके जात रहेन कि का देखा कि रामबहादुर भागेभागे चले आ रहेन-। हमें देख के बोलेन कि अरे ओहर कहां जा रहा रे बुधइया। उधर तो लाठी चलत है।
चंद्रिका त रामबहादुर यादव ने टोपी पहन रखी थीउस वक़्तबुधई यह बताओ कि क्या :?
बुधई बाप। यादवजी का त हम कभई नंगे सिर देखा ही नहीं-जी माई :।"

कुल मिलाकर धारावाहिक 'नीम का पेड़' दूरदर्शन पर दिखाए गए धारावाहिकों की एक ऐसी कड़ी है जो अपने बेहतरीन संवाद एवं दृश्य के आधार पर भारत के संपूर्ण सामाजिक्त करता है।नाओं के संदर्भ में प्रस्तुको वर्तमान काल की विडम्बवस्थाराजनीतिक व्य- साथ ही टेलीविजन धारावाहिकों की भाषा दृश्यात्मक होती है तथा इसका एक अपना व्याकरण होता है। यहां शब्दों की तुलना में दृश्य अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं, फिर भी सरल, संक्षिप्त व छोटे स संवाद को प्रभावी बनाते हैं। इस आलोक में धारावाहिकविन्या-छोटे वाक्य-'नीम का पेड़' की भाषिक बुनावट पर अवधी का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वैसे भी इस धारावाहिक के पटकथा व संवाद लेखन में शब्दोंके चयन को लेकर राही मासूम रज़ा अत्यंत सतर्क दिखते हैं। यही कारण है कि धारावाहिक अपने निर्माण एवं प्रस्तुति में अपने मूल कृति से काफी संतुलन बनाया हुआ है। इस प्रकार धारावाहिक 'नीम का पेड़' में भाषा का कोई एक निश्चित ढांचा नहीं है। इसमें भाषा निर्बाध गति से चलते हुए अपने रचनात्मक दायित्व पर केंद्रित होकर संवाद एवं दृश्योंको पात्रानुकूल बनाती है। इसलिए यह देश क्याहै, समाज क्या है, लोग कैसे

हैं, उनका व्यवहार कैसा है, आदि महत्त्वपूर्ण आयामों को समेटता यह धारावाहिक हिंदुस्तान की सामाजिक-राजनीतिक आत्मा और उसकी स्थिति को उद्घाटित करने की पहल करता है।

'नीम का पेड़ ' के दृश्य:श्रव्य रूपांतरण की सीमाएं-

साहित्यिक कृतियों का दृश्य ताओं के आलोक मेंगत विशिष्ट रूपांतरण एक जवाबदेही एवं चुनौती भरा काम होता है। माध्यश्रव्य-उपन्यास जहां एक ओर पाठ्य सामग्री के रूप में मुद्रित माध्यम है, वहीं दूसरी ओर टेलीविजन धारावाहिक दृश्यम के रूप में माध्यश्रव्य-म है। ये दोनों विधाएंमाध्य क्ति का सशक्तक अभिव्यरचनात्म, हालांकि, अपनी प्रकृति में अलग-अलग तो होती हैं, लेकिन रचनात्मक संदर्भ में मानव कल्याणोन्मुखी उद्देश्यों का निष्पादन करती हैं। चर्चित रचनाकार राही मासूम रज़ा की कालजयी कृति'नीम का पेड़' की कथावस्तु का संबंध वास्तव में किसी स्थान या घटना विशेष तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका कैनवास इतना बड़ा है कि वह मानव समाज की तमाम समस्याओं एवं जटिलताओं को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपनी परिधि में समेट लेता है।

इस औपन्यासिक कृति का टेलीविजन धारावाहिक के रूप में दृश्य रूपांतरण का सबसे मजबूत व खास पहलू यह है किश्रव्य-धारावाहिक के अधिकांश एपिसोड के लिए पटकथा व संवाद लेखन काकार्य स्वयं राही मासूम रज़ा ने पूरा किया था और उनकी मृत्युके बाद ज़ाफरी साहब ने बड़ी इमानदारी से शेष दायित्व को पूरा किया। फिर भी धारावाहिक 'नीम का पेड़' में माध्यमगत विशिष्टताओं के अनुरूप जहां एक ओर कुछ नए प्रसंगों को जोड़ा गया है तो दूसरी ओर कुछ प्रसंगों का दृश्यश्रव्य रूपांतरण संभव नहीं हो पाने के कारण धारावाहिक से अलग कर दिया गया है। विवेचनार्थ, उपन्यास 'नीम का पेड़' के दृश्य-श्रव्य रूपांतरण की सीमाओं को निम्नलिखित बिंदुओं के संदर्भ में स्पष्ट किया जा सकता है, यथा-

- जमींदार सिक कृतिक्ति औपन्याआसामी संबंधों की अभिव्य'नीम का पेड़' की केंद्रीय समस्या है। भारत के सैकड़ों वर्ष की सामाजिक परंपरा में जमींदारों का आसामी के प्रति जो दृष्टिकोण है और जो उसकी यातना है उसे राही ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में चित्रित करते हैं। समूची जमींदारी व्यवस्था में आसामी केवल और केवल शोषित हैं तथा उनके जीवन की सार्थकता जमींदारों की बेगारी में है।
- धारावाहिक 'नीम का पेड़' में मन का आवेग और दुख रिश्तोंके आत्मीय क्षणों को परिभाषित करते कई दृश्यों में अनेक स्तरों पर दिखाई देते हैं। यथा सामिन मियां का यह संवाद—"आपको कसम है चचा। यह बात आप अपने तक ही रखेंगे। हम सुखीराम भइया से तो अलग हैं, लेकिन आपसे अलग नहीं हो पाए। हममें लाख बुराई है चाचा पर हम आपको बहुत चाहते हैं। सुखराम भइया को हमने हमेशा अपना भइया ही समझा' ध्यातव्य है।
- मूल उपन्यास की कथा में कई प्रसंग ऐसे हैं जिनका रचनात्मक पतिपाद्य के अनुरूप दृश्य-श्रव्य रूपांतरण संभव नहींहो पाया है और जहां निदेशक ध्वनि एवं दृश्य प्रभाव संयोजन का सहारा लेकर धारावाहिक (साउंड एंड विज़ुअल इफेक्ट) की निरंतरता एवं उसकी क्रमबद्धता को बनाए रखता है, यथा-

  -''बहुत दीवारें गिर गई इन बरसों में मदरसा खुर्द में'

  -"गांव में रहना है तो बदली हुईहवा के साथ ही चलना होगा"

  -"सत्ता का अपना एक नशा होता है और अपनी ज़ात भी। जो भी उस तक पहुंचता है, उसकी ज़ाति का हो जाता है"

  -"सियासत भी कमाल की शै है। मैंने तो पीढ़ियां देख लीं यहां खड़ेहुआखड़े। नीम का पेड़ हूं तो क्या? क्या मैं यह नहीं जानता कि किस तरह के रिश्तों की बुनियाद पर इसकी इमारत टिकी होती है"।

कहना गलत न होगा कि धारावाहिक 'नीम का पेड़' में दर्शकों के भीतर विशिष्ट मन की भरमार हैस्थिति पैदा करने वाले दृश्यों:। साथ ही इसमें संवाद प्रधान दृश्यों की भरमार होने के कारण भव्य एक्शन दिखा सकने की कोई खास गुंजाइश नहीं है।धारावाहिक का अंतिम

एपिसोड बुधई का अपने विश्वास के पराजय की विवश स्वीकृति का आख्यान है। अंततगत है कि वह एक वस्तुवह यह मानने को बाध्य : हैसत्य और उसके सूत्र अपने निर्णयों और परिस्थितियों से जुड़ेहुए हैं। हालांकि, इस स्थिति का पाठ्य रूप काफी मार्मिक है जहां अपने विश्वासों के साथ समय से पराजित एक व्यक्ति का अकेलापन, निस्सहायता और विकल्पहीन विवशता का एक जीवित बिंब है। इस प्रकार उपन्यास का अंत बुधई को इस बोध से भर देता है कि समय ही सूत्रधार हैतथा वह जीवन को कहीं कहीं भी ले जा सकता है।-से-सामाजिक, राजनीतिक संघर्ष और जीवन की चुनौतियों के प्रति उदासीन व्यक्ति या वर्ग की परिणति आत्मघात में होती है। यही कारण है कि धारावाहिक 'नीम का पेड़' एक अनियंत्रित और बेहयाई उच्छृंखलता से आवृत्त व्यवस्था के प्रसंगानुकूल दृश्यांकन की सीमाओं से अपनेआप को पूरी - नहीं कर पाया है।तरह से मुक्त

क्योंकि, औपन्यासिक कृति 'नीम का पेड़' का टेलीविजन धारावाहिक के रूप में दृश्यविक है रूपांतरण की सीमाएं वास्तश्रव्य-ं। इसे किसी भी प्रकार से निदेशकीय अकुशलता अथवा कमजोर पटकथा लेखन का प्रभाव नहीं माना जा सकता। इस आलोक में कई बार तो निर्माता के अनुरूप पात्र व संवाद तैयार किए जाते हैं। फिर भीनिदेशक तकनीकीगत सीमाओं का भी सामना करना पड़ता है तथा दृश्यों कता के आलोरचनात्मक में पूरा धारावाहिक अपनी मूल कथा के अनुरूप ही आगे बढ़ता है तथा इसका औपन्यासिक उद्देश्य कहीं से भी खंडित प्रतीत नहीं होता। दृश्य सीमाओं के बावजूद भी यह धारावाहिक अपने प्रसारण के दौरान दर्शकों पर अमिट रूपांतरण की उपरोक्तश्रव्य-प्रभाव छोड़ा और लोकप्रियता का नव कीर्तिमान स्थापित किया।

निष्कर्ष:

दरअसल समाज और राजनीति का सशक्त चित्रण धारावाहिक 'नीम का पेड़' का केंद्रबिंदु है। समाज का कोई भी अंग इस धारावाहिक में अछूता नहीं रह पाया है। यही कारण है कि समसामयिक जीवन एवं परिवेश की विसंगतियों को पूर्णतक्ति देने में अभिव्य : धारावाहिक का हरेक एपिसोड प्रासंगिक है। साथ ही निदेशक ने मानव जीवन की जटिल संवेदनाओं और उसके अंतद्वंद्वों की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के लिए फैंटेसियों का कलात्मक उपयोग किया है। कतिपय काल्पनिक प्रसंग व दृश्यों के माध्यम से विचारों की परतें एक के बाद एक खुलती जाती हैं तथा दर्शकों में धारावाहिक की बौद्धिक उर्वरता की सही अनुभूति होती है।क्योंकि, सत्ता शासक वर्ग की बेहोशी का प्रतीक है जो अपने दायित्वों से, परिस्थितियों से अनभिज्ञ है, इसलिए सामाजिक, राजनीतिक संघर्ष और जीवन की चुनौतियों के प्रति उदासीन व्यक्ति या वर्ग की परिणति आत्मघात में होती है। सामंती संरचना ने मनुष्यको एक हद तक तटस्थ, अकर्मण्य और निस्संग बनाया है और कहना गलत न होगा कि समकालीन सामाजिक कर दिया है। इसलिए वर्ग से श्रम के अवसर को समाप्त ने अभिजात्यवस्थाराजनीतिक व्य- धारावाहिक'नीम का पेड़' का एक प्रकार से श्रमहीन, दायित्वविहीन समाज और भ्रष्ट राजनीतिक तंत्र की तरफ इशारा भी करता है।

दरअसल धारावाहिक 'नीम का पेड़' की रचनात्मकता के केंद्र में स्वातंत्र्योत्तर भारत की सामाजिक का वस्थाराजनीतिक व्य- कन हैदृश्यां, जहां आजादी व व्यक्ति के सपनों के हक में लड़ने वाले लोग निर्वासित, उपेक्षित व परित्यक्त हैं। यह धारावाहिक केवल राजनीति के चारित्रिक स्खलन ओर उसकी क्रूरता की ही दास्तान नहीं है, बल्कि उसमें समकालीन राजनीति के विकल्प की खोज का तनाव और बेचैनी भी है। साथ ही धारावाहिक में राजनीति के पतन को सामाजिक सापेक्षता में चित्रित किया गया है। यह कथित जनतंत्र की विडम्बना है कि जनतंत्र के तंत्र को कायम रखने के लिए हरिजन टोली की उपेक्षा की जाती है। दलित और शोषित जनता को जागरूक बनाने वाले रामखिलावन यादव की हत्या कराई जाती है। निसंदेह यह भय:, हिंसा व असहिष्णुता पर आधारित राजनीति है। और, राजनीति के चरित्र की यही अंतर्कथा धारावाहिक 'नीम का पेड़' का रचनात्मक प्रतिपाद्य है जहां देश व काल के एक संगठित विधान में स्वातंत्र्योत्तर भारत के राजनीतिक यथार्थ को धारण किया गया है। इसका मूल उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह दर्शकों में कौतूहल वृत्ति को जगाकर उन्हें दृश्यों में इस तरह बांध लेता है कि थोड़ी देर के लिए वे अपने आप को विस्मृत कर देते हैं। इसमें भौगोलिक, राजनीतिक एवं भाषाई चेतना से उभरी आंचलिकता विश्वसनीय लगती है।

वस्तुत के बहिर्जीवन का प्रेरक और परिचालक है। अंतर्मन के अतल में दबीक्ति का अंतर्जीवन ही उसव्य :प्रवृत्तियां वैयक्तिक जीवन को ही नहीं, अपितु सामूहिक जीवन को भी प्रभावित करती हैं। धारावाहिक के लगभग सभी पात्र अपने अंतरतम में प्रवेश कर मन में दबी

भावनाओं का निर्ममता से चीड़फाड़ करते हैं-। परिणामस्वरूप यह धारावाहिक प्रसंगों के अनुरूप अपने पात्रों के अंतर्मन में निहित कुंठाओं, हीनताओं आदि को सामने लाकर उनके व्यवहार का विश्लेषण विभिन्न दृश्यों के आधार अत्यंत ही प्रभावी ढंग से किया है, जो कथा की दृश्यात्मक प्रस्तुति को काफी रोचकता प्रदान करते हैं। बदलते समय में शिक्षा के प्रचारप्रसार के परिणामस्व-रूप लोगों में जागरूकता आई है। लोग रू ढियों एवं अंधविश्वासों को धीरेग रहे हैं। इससे सिद्ध होता है कि इस धारावाहिक का निर्माण व प्रसारण केवल मनोविनोद के धीरे त्या- लिए नहीं है, अपितु समाज को नैतिक दायित्वों का बोध कराने एवं रसानुभूति कराने के उद्देश्यसे भी की गई है। स्वातंत्र्योत्तर राजनीति में जमीनी जनता की कोई भूमिका और भागीदारी नहीं है। यहां राजनीति जनता को संस्कारित नहीं करती, उसे नई चेतना से, नए स्वप्नों से नहीं जोड़ती, बल्कि पूर्व संस्कारों को दृढ़ करती है और पूर्व संस्कार हैंजातिवाद -, अंधविश्वास और अशिक्षा।

यह धारावाहिक अपनी कथावस्तु में जिस कालखंड का चित्रण करता है, उस समय की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक चेतना का भी समावेश विभिन्न दृश्यों के माध्यम से किया गया है। हालांकि,इसकी रचनात्मक उपादेयता को किसी कालखंड में नहीं बांधा जा सकता है। कुल मिलाकर धारावाहिक 'नीम का पेड़' अपनी समग्रता में इस कथ्य की संपुष्टि करता है कि स्वतंत्र्योत्तर भारतीय राजनीतिक व्यवस्था ने किस प्रकार समाज के परंपरागत ढांचे को कायम रखने के लिए अनेक प्रकार की व्यवस्थाएं करता है और उन्हीं व्यवस्थाओं में इस देश, समाज और राजनीति के पतन के संदर्भ देखे जा सकते हैं। इस दृष्टि से यह धारावाहिक आजादी और आजादी के बाद की हिंदुस्तानी जीवन का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। कुल मिलाकर यह धारावाहिक भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक प्रारब्ध का एक तथ्य कल्पित दृश्यात्मक दस्तावेज है तथा दूरदर्शनपर दिखाए गए धारावाहिकों की कड़ी में एक अभूतपूर्व प्रयास है।

सहायक संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रज़ा, राही मासूम; नीम का पेड़,2010 , दूसरी आवृत्ति राजकमल प्रकाशन प्रा.लि ., नई दिल्ली.
2. गुप्ता,मीडिया साहित्य और संस्कृति ;ओम , 2002, कनिष्का पब्लिशर्स.नई दिल्ली ,
3. चतुर्वेदी, जगदीश्वर एवं सिंह्सुधा ,; जनमाध्यम सैद्धांतिकी,2002 , अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्सलिमिटेड (.प्रा), नई दिल्ली .
4. चतुर्वेदी ,टेलीविजन संस्कृति और राजनीति ;जगदीश्वर ,2004, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर , .लि (.प्रा)नई दिल्ली.
5. चोपड़ा, लक्ष्मेंद्र; मीडिया और समाज,2006 , आधार प्रकाशन, पंचकूला .(हरियाणा)
6. जोशी ,संस्कृति विकास और संचार क्रांति;पुरण चन्द्र ,2001, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन.नई दिल्ली ,
7. जोशी, मनोहर श्याम; पटकथा लेखन एक परिचय,2013 , चौथी आवृत्ति, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली.
8. वजाहत, असगर व रंजन, प्रभात; टेलीविजन लेखन,2010 , दूसरी आवृत्ति राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि ., नई दिल्ली.
9. जोशी, रामशरण; मीडिया विमर्श,2008 , सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली .